Chap-2

द्वितीय अध्याय

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना : उद्‌भव और विकास

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना : उद्‌भव और विकास --

राष्ट्रीय भावनाओं से अनुप्राणित होकर लिखा गया साहित्य राष्ट्रीय साहित्य कहा जा सकता है। ऐसे साहित्य में अपने देश के प्रति रागात्मक भाव की अभिव्यक्ति विशेष होती है।[1] जब किसी देश की जनता या जाति अपने गौरव को भूलने लगती है या उसका राजनीतिक सामाजिक आदि रूप से पतन होने लगता है या भावात्मक रूप से उसकी आत्मा को जबरदस्त धक्का लगता है तब साहित्य सृजन द्वारा पुनः लोगों के हृदय में अपने देश के प्रति अनन्य प्रेम जागृत करने का गुरूदायित्व का निर्वाह साहित्यकारों द्वारा होता है। राष्ट्रीय साहित्य का तात्पर्य समझाते हुए डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा का कहना है कि " राष्ट्रीय साहित्य किसी एक ही अर्थ का द्योतक नहीं कहा जा सकता। राष्ट्रीय साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त साहित्य लिया जा सकता है, जो किसी देश की जातीय विशेषताओं का परिचायक हो। इस प्रकार के साहित्य में जाति का समस्त रागात्मक स्वरूप, उसके उत्थान-पतन आदि का विवरण आ सकता है। उसका होना एक प्रकार से अनिवार्य ही है।"[2] इस दृष्टि से वे सभी रचनाएँ जो किसी देश की सभ्यता, संस्कृति, धर्म आदि को व्यक्त करने वाले हैं, राष्ट्रीय साहित्य के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं।

राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित साहित्य में मुख्य रूप से निम्नलिखित भावो के आकलन की प्रधानता मानी गई है-- देश-गौरव एंव राष्ट्र भक्ति, स्वर्णिम अतीत का गौरवगान, राष्ट्रवंदना के स्वर एंव प्रशस्तिगान, राष्ट्र की हीनावस्था का चित्रण, विदेशी शासन से जूझने या आक्रमण से सुरक्षा की भावना, प्रतिकूल शासन व्यवस्था के विरूध विद्रोह की भावना, नवजागरण, राष्ट्रीय समृद्धि का महाभियान, विघटनकारी प्रवृत्तियाँ, देशद्रोहियों के प्रति आक्रोश आदि।[3]

भारतीय साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ वेद माने जाते हैं।[4] विद्वानों के मतानुसार ऋग्वेद में राष्ट्र प्रेम से युक्त अनेक उदाहरण मिलते हैं। परम पवित्र ग्रन्थ ऋग्वेद में उल्लेखित 'राष्ट्र' शब्द से आर्यो की समस्त भावना के साथ देश, राज्य, जाति व संस्कृति सभी का समग्र चित्र उपस्थित हो जाता है।[5] इस प्रकार वैदिक साहित्य में राष्ट्र के रूप में आर्यावर्त की कल्पना विद्यमान है जिसमें विश्व-बन्धुत्व का उज्जवल उद्देश्य भी निहित है। तत्‌पश्चात उपनिषदों व ब्राह्मण ग्रन्थों में भी राष्ट्रीय चेतना कीं अभिव्यक्ति अनेक स्थलों पर मिलती है। भारत का प्राचीन नाम आर्यवर्त है और यह आर्य जाति की

क्रीड़ा स्थली रही है। आर्यो ने जातीय एकता के द्वारा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया था।[6] इस प्रकार भारतीय साहित्य अपने प्राचीन काल से राष्ट्रीय भावना से युक्त रहा है।

भारत के प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ-वाल्मीकि रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत गीता आदि के पश्चात संस्कृत के कवि-कुल शिरोमणि कालिदास की महान कृतियॉ एंव श्रीहर्ष, बाणभट्ट, माध, भारूचि जैसे प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थकारों की रचनाओं में समय - समय पर निरन्तर राष्ट्रीय चेतना की एक सूत्रता प्राप्त होती है। भारत में राष्ट्रीय चेतना के विकास को प्राचीन काल से मानने वाले विद्वानों ने पौराणिक कथाओं द्वारा भी राष्ट्रीय एकता के प्रसार की बात की है।[7] विष्णु पुराण में भारत की नदियाँ, हिमालय पर्वत और समुद्र का जिस प्रकार वर्णन किया गया है उससे राष्ट्रीय एकता बलवती होती हैं--

'उत्तर यत्समद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्ष तद्भारत नाम भारतीयत्र सन्ततिः ।[8]

इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के प्रारम्भ से पूर्व देश का साहित्य राष्ट्रीय चेतना से युक्त रहा है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में राष्ट्रीय भावना का स्वरूप मुख्य रूप से हिन्दुत्व के भाव को उभारने वाला है।[9]विदेशी आक्रमणों के कारण तत्कालीन साहित्य में यह भावना प्रबल होती चली गयी। 'पृथ्वीराज रासो' जैसी बृहत्काय वीरकाव्य में आन्तरिक युद्ध का वर्णन नहीं अपितु विदेशी आक्रमणकारों से राष्ट्र की सुरक्षा हेतु युद्ध द्वारा वीरोचित भावना ही निरूपित है। इस रचना के अतिरिक्त वीर रस प्रधान अन्य रचनाओं में भी जातीय गौरव का गान विशेष रूप से पाया जाता है। इस युग की दूसरी प्रधान काव्य प्रवृर्ति के रूप में प्रसिद्ध श्रृंगारिक रचनाओं का अपना निजि महत्त्व रहा है। तत्कालीन कवियों ने इन रचनाओं के माध्यम से न केवल श्रृंगार रस का निरुपण किया है अपितु इसके द्वारा साहित्य को लोक भोग्य बनाया है तथा लोग जीवन को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार राष्ट्रीय जीवन की झॉकियों को प्रस्तुत करने में आदिकालीन श्रृंगारिक रचनाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है।

भक्तिकाल में सांस्कृतिक पुनरूत्थान को वहन करने वाले भक्ति आन्दोलन द्वारा हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना, धर्म, और सांस्कृतिक पुनरूत्थान की ओर उन्मुख हुई हैं। "मध्ययुग हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों का समन्वय का काल है।" [10] धर्म, इतिहास, रीति-रिवाज, कला, संगीत आदि में परस्परिक मेल से नयी भारतीय संस्कृति

का निर्माण हुआ था। भक्ति काव्य के प्रवर्तक कबीर, दादू, नानक, रैदास, जायसी, जैसे सन्त और सूफी कवियों तथा सगुण भक्ति करने वाले सूर-तुलसी जैसे भक्त कवियों ने राष्ट्रीय जीवन को पुनः नया स्वरूप प्रदान किया। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में रामराज्य की कल्पना द्वारा आदर्श राष्ट्र के स्वरुप को ही चित्रित किया है।सूर के मधुर कृष्ण-काव्य में भारतीय जीवन की आशा-आकांक्षाओं का रागात्मक निरूपण पाया जाता है। भक्तिकालीन साहित्य का सांस्कृतिक महत्त्व बताते हुए सुमित्रानन्दन पन्त का कहना है कि - "मध्ययुगीन दार्शनिक सन्तों तथा कवियों ने देश को सांस्कृतिक विघटन और ह्रास से बचाया।"[11]

रीतिकाल,राजनीतिक एंव सामाजिक दृष्टि से घोर पतन का युग कहा जा सकता है। इस काल में राज्याश्रित कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए दरबारी जीवन का निरुपण करते हुए श्रृंगारिक रचनाओं का निर्माण किया। डॉ॰ विद्यानाथ गुप्त के मतानुसार- "रीतिकाल में कोई ऐसा कवि दृष्टिगोचर नहीं होता, जिसने व्यापक रूप में राष्ट्रीयता का प्रचार कर सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में अनुस्यूतः करने का प्रयास किया हो, परन्तु जो कार्य इस युग के कवियों ने सीमित रुप में किया, वह राष्ट्रीय गौरव से सदंतर खाली नहीं।[12] इस काल में भूषण जैसे कवि हुए जिन्होंने जातीय गौरव को परखा और उसका गान करवैभव विलास और प्रमोध में सुप्त जनता को जगाने का स्तुत्य प्रयास किया।

रीतिकाल की समाप्ति से पूर्व ही देश में राजनीतिक परिवर्तन आरम्भ हो चुका था। मुगल सल्तनत धीरे-धीरे नष्ट प्रायः होने लगी और अंग्रेजों ने अपनी कूटनीतियों से भारत में विदेशी शासन के साम्राज्य की स्थापना कर दी। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल विदेशी दासता के बन्धनों में जकड़ी हुई जनता की दयनीय दशा,उसकी पीड़ायुक्त छटपटाहट और मुक्ति के लिए किए गए दीर्धकालीन संघर्षो का युग है। इस युग में स्वाधीनता के लिए किये जा रहे आन्दोलनो के साथ राष्ट्रीय भावना का निरन्तर विकास होता गया।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम भारतेन्दु जी की रचनाओं में राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप पाया जाता है। उनकी साहित्यिक - कृतियों ने जन-जागृति को व्यापक बनाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। भारतेन्दु तथा उनके समकालीन कवियों की काव्य रचनाओं में जहाँ एक ओर भारतीय जनता की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण है, वहीं दूसरी ओर अतीत के गौरव का गान भी है।[13] भारतेन्दु जी की प्रेरणा से उनके समकालीन साहित्यकारों ने भी हिन्दी साहित्य के माध्यम से जन-जागृति के आन्दोलन

को देश व्यापी बनाया। यह युग आधुनिक हिन्दी गद्य-साहित्य का आरम्भिक काल था। गद्य-साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावना के प्रचार और प्रसार में अधिक सरलता रही। स्वराज्य आन्दोलन एंव नवजागरण के विचारों को वहन करने में यह एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ। ज्यों-ज्यों अंग्रेजों के पूंजीवादी साम्राज्य में दमन और शोषण का दौर कड़ा होता गया त्यों-त्यों देश के विभिन्न क्षेत्रों से जागृत लोगों ने राष्ट्र प्रेम के बिखरे एंव दबे हुए स्वर को वाणी देकर उसे प्रभावशाली एंव सशक्त बनाया। भारतेन्दु के नाटको ने देश के कटु यथार्थ को रंगमंच पर उतारा। भारतेन्दु-काल राष्ट्रीय जागरण तथा नव सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष युग था। इससे जहाँ एक ओर जनमानस में स्वराज्य प्राप्ति की तीव्र आकांक्षा द्वारा राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ वहीं दूसरी ओर सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों, मृत मान्यताओं एंव निर्जीव परम्पराओं से मुक्त होने की जागरूकता आयी।

भारतेन्दु युग के पूर्वार्द्ध में राष्ट्रीय चेतना,राजभक्ति में अभिव्यक्ति पा रही थी। लेकिन इस युग के कवियों ने राजभक्ति को त्यागकर देशप्रेम और देशोन्नति की प्रेरणा जगाई।इनमें बदरी नारायण चौधरी, प्रेमधन, बालमुकुन्द गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र और राधा स्वामी आदि कवि प्रमुख है। जिन्होंने देश की जनता में, देश भक्ति की भावना का संचार करते हुए उसे उन्नति के पथ पर अग्रसर होने का सन्देश दिया। भारतेन्दु युग में औद्योगीकरण की जो प्रेरणा देश को मिली उसका विकास द्विवेदी युग के काव्य में भी लक्षित है।

द्विवेदी युग में हिन्दी साहित्य पूर्णतः राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान और तत्कालीन चिन्तनधारा से जुड़कर जनमानस में राष्ट्रीय चेतना की ऐसी आग लगाने में सफल हुआ जिससे दो सो साल पुरानी अंग्रेजी सत्ता नष्ट हो गई। स्वातन्त्र्य आन्दोलन, बंगभंग आन्दोलन तथा आर्य समाज जैसी संस्थाओं के कार्यो के परिणाम स्वरूप इस युग में सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में नवीन चेतना प्रकट हुई और भारतीयों ने अपने हृदयों में भारतेन्दु युग की अपेक्षा अधिक आत्म गौरव के भाव का अनुभव किया।[14] द्विवेदी युग के कवियों को विदेशी शासको से पूरी निराशा हुई और उनके अत्याचारों के प्रति वे पूर्णतया सजग हुए। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इनकी काव्य साधना का निर्मल प्रवाह ऐसा बहा जिसमें संकीर्णता और साम्प्रदायिकता की कलुषिता बह गयी। परिणाम स्वरूप देशवासियों को एकता के सूत्र में बॉधने का प्रयत्न किया और साथ ही देश की स्वतन्त्रता के लिए मर-मिटने की प्रेरणा जगाई।

द्विवेदीयुगीन राष्ट्रीय भावना अतीत से वर्तमान, कल्पना से यथार्थ, निराशा से आशा, अविश्वास से विश्वास, उपदेश से कर्म और आत्महीनता से आत्मगौरव की ओर अग्रसर दिखाई देती है।[15] श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, गोपालशरण सिंह, सियारामशरण गुप्त, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि इस युग के प्रायः सभी साहित्यकारों ने मातृभूमि के प्रति अपने हृदय का सच्चा स्नेह व्यक्त किया। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी 'भारत भारती' के माध्यम से भारतवासियों का ध्यान भारत के स्वर्णिम अतीत, वर्तमान दुर्दशा तथा उज्जवल भविष्य की ओर आकृष्ट किया। उन्होनें भारत की एकता के लिए हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य को अनिवार्य माना। सुभद्राकुमारी चौहान ने अपनी कविता 'झाँसी की रानी' द्वारा वीरता,त्याग,बलिदान के भावों से युक्त देश भक्ति की प्रखरतम भावना को जागृत किया। श्रीधर पाठक ने 'भारत गीत' नामक कविता में मातृभूमि की वन्दना करते हुए उनकी दिव्य झाँकी प्रस्तुत की। माखनलाल चतुर्वेदी ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए देशवासियों को ललकारा ही नहीं वरन् बलिदान की भावना से भी ओत-प्रोत किया। राष्ट्रीय चेतना के समर्थ कवि दिनकर की समग्र काव्य-यात्रा ओज, उत्साह और प्रेरणा की उमंग को उड़ाती चली है।[16]

भगवान के अवतारों की पौराणिक कल्पना से प्रेरित होकर भारत-भूमि को एक देवी के रूप में कल्पित किया गया।[17] बंकिमचन्द्र ने 'वन्देमातरम्' से मातृभूमि के देवत्व और उसकी समृद्धि को सजीव किया। इसी भावना से प्रेरित होकर देश की प्राकृतिक छटा को राष्ट्रीय भावना से युक्त करके कवियों ने चित्रित किया।

राष्ट्रीय नव-जागरण के उदय का प्रभाव पद्य-साहित्य में ही नहीं बल्कि हिन्दी के गद्य साहित्य में भी परिलक्षित होता है।हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी इस उदात्त भावना का परिचय प्राप्त होता है। बंकिमचन्द्र का 'आनन्द मठ' शरदचन्द की 'गोरा'और कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी की 'रंगभूमि','सेवासदन', 'प्रेमाश्रय', 'गोदान' जैसी रचनाओं में भारतीय जीवन के आदर्श और राष्ट्रीय चेतना की समन्वित अनुभूतियाँ अभिव्यक्त की हैं।

द्विवेदी युग के पश्चात हिन्दी गद्य का विकास अनेक विध-विधाओं द्वारा बहुमुखी हुआ। आरम्भिक हिन्दी गद्य साहित्य आदर्शोन्मुख होकर समूचे राष्ट्र की जनता को राष्ट्रीय एकता में बाँधने में सक्षम था। देश में सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत था। हिन्दी के सचेतन साहित्यकारों ने नूतन चेतना और जागरण के भावों को जन-मन तक पहुँचाया।

प्रेमचन्द युग तक आते - आते हिन्दी कथा साहित्य में एक और विचार धारा पनपने लगी जो केवल उपदेशात्मक न होकर, यथार्थवादी आदर्शवाद की भावना से ओत-प्रोत थी। प्रेमचन्द जी ने काल्पनिक आदर्श के स्थान पर समाज के कटु यथार्थ का चित्रण किया। अपने साहित्य में किसानों की आर्थिक दीनहीन दशा, ग्रामीण जीवन की दुर्बलता, विधवाओं तथा वेश्याओं की समस्या, दहेज की कुप्रथा, घर और समाज में नारी की स्थिति, अस्पृश्यता, साम्प्रदायिक वैमनस्य, मध्यमवर्ग की कुण्ठाएँ, ज़मींदारों, पूँजीपतियों और सरकारी कर्मचारियों द्वारा किसानों का शोषण आदि तत्कालीन प्रश्नों पर प्रकाश डाला।[18] प्रेमचन्द युग में हिन्दी के साहित्यकारों ने पहली बार राष्ट्रीय जीवन की विभिन्न समस्याओं को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने रखकर उनमें एक नवीन चेतना का संचार किया। वे नये सामाजिक एंव धार्मिक सुधारों के प्रति प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। प्रेमचन्द जी के साथ इस युग में जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी साहित्यिक रचनाओं द्वारा भारत के सांस्कृतिक गौरव को पुनः प्रतिपादित करने का यत्न किया। उनके नाटक विशेष रुप से राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। उनमें अतीत के राजनीतिक - सांस्कृतिक गौरव, सामाजिक - धार्मिक सुधार, समकालीन समस्याओं का निराकरण आदि को एक साथ निरुपित किया है। देश के राष्ट्रीय गौरव और नवजागरण का ज्वलन्त उदाहरण प्रसाद जी की कृतियो में सर्वत्र प्राप्त है -

हिमाद्री तृंग - शृंग से प्रबुद्ध बुद्ध भारती ।
स्वंय प्रभा सम उज्जवला, स्वतन्त्रता पुकारती।[19]

उनके काव्य में भारतीय प्रकृति का चित्रण, मानवीय प्रेम की सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति,उनके उपन्यास, कहानियों में नारी के गौरव का निरूपण, धार्मिक-सामाजिक कुमान्यताओं-रूढ़ियों पर प्रहार तथा नयी चेतना की उज्जवलता एवं नाटय रचनाओ में अतीत का गौरव - गान, वीरता, त्याग और बलिदान की प्रेरणा तथा समकालीन सामाजिक, धार्मिक, सास्कृतिक एवं राजनीतिक समस्याओं के समाधान को पाया जा सकता है।छायावादी युग के काव्य में विश्व-बन्धुत्व एवं विश्व-मानवता का स्तर, राष्ट्रीय चेतना के रूप में घोषित हुआ है।भारत के स्वातन्त्र्य आन्दोलन को गाँधी जी के आगमन से एक नयी दिशा और बल प्राप्त हुआ।राजनीतिक संकट से मुक्त होने के लिए उन्होंने सत्य, अहिंसा, निर्भयता, सादगी और आत्मबल के नये शस्त्र प्रदान किये। भारत की दीनहीन जनता में मानो नये प्राण भर दिये। परिणाम स्वरूप देश ने स्वतन्त्रता के नये

सूर्योदय का दर्शन किया। स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व साहित्यकारों ने जहॉ राष्ट्रीय चेतना के प्रचार और प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था वहाँ,स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यकारों ने देश के नवनिर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व देशवासियों ने रामराज्य की सुखद कल्पना द्वारा जो सपना संजोया था वह स्वातन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सच न हो सका। अतः कुंठा, निराशा, आक्रोश का स्वर साहित्यिक रचनाओं में फूटा। साथ ही मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्राणित होकर नयी समाज रचना के प्रयत्न की अनुगूँज भी अपने मौलिक रूप में सुनाई देती है। राष्ट्रीय अभाव और व्यथा का जहॉ समसामयिक चित्रण साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अंग है, वहॉ देश की भावात्मकता का औचित्य भी नये साहित्यकारों से ओझल नहीं रहा है।अतः आज साहित्य में देश की अखण्ड़ता की रक्षा, राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान, देश की समृद्धि की इच्छा, सामाजिक राजनैतिक भ्रष्टाचार एंव कुरीतियों के प्रति आक्रोश, देशद्रोही के प्रति नफ़रत, देश के नवनिर्माण के लिए साहस और समर्पण आदि रूप में राष्ट्रीय चेतना का व्यापक धरातल प्रस्तुत हुआ है।

-: सन्दर्भ सूची :-

१) डॉ० राजकमल बोरा - आधुनिकता और राष्ट्रीयता -पृ. ६६

२) धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोश भाग-१ -पृ. ६५३

३) डॉ० राजकमल बोरा - आधुनिकता और राष्ट्रीयता -पृ. ६७

कृष्णकुमार बिस्सा 'चन्द्र' - साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना -पृ.१२३-१२४

४) कृष्णकुमार बिस्सा 'चन्द्र' - साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनीकित चेतना -पृ. १२०

५) वही - वही -पृ.१२०-१२१

६) वही - वही -पृ. १२१

७) वही - वही -पृ. १२१

८) विष्णु पुराण - अं० २, अं०३, श्लोक ०१

९) धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोष-भाग-१ -पृ. ६५३

१०) कृष्णकुमार बिस्सा 'चन्द्र' - साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना -पृ. १२२

११) सुमित्रानन्दन पन्त - चिदम्बरा, प्रस्तावना

१२) विद्यानाथ गुप्त - हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना -पृ. १८८

१३) सम्पादक डॉ० नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास -पृ. ४५५

१४) डॉ० रामसागर त्रिपाठी डॉ० शान्ति स्वरूप गुप्त - बृहत् साहित्यिक निबन्ध -पृ. ६७८

१५) वही - वही -पृ. ६७८

१६) डॉ० देवराज पाथिक - नयी कविता में राष्ट्रीय चेतना -पृ. ४६

१७) सम्पादक डॉ० नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास -पृ.५२९

१८) वही - वही -पृ. ५८३

१९) डॉ० रामसागर त्रिपाठी डॉ० शान्ति स्वरूप गुप्त - बृहत् साहित्यिक निबन्ध -पृ. ६८०